EDUCATIONAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part - III
Paper - VI group - (A)
By - Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

ROLE OF MOTIVATION IN LEARNING

शिक्षा की सफलता कई बातों पर निर्भर करती है। इनमें प्रेरणा भी एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रेरणा के महत्व को रेखांकित करते हुए गेट्स आदि (Gates etal) ने कहा है :-

"Motivation is the Sine qua non of learning"

अर्थात प्रेरणा शिक्षण के लिये एक आवश्यक कारक है। प्रेरणा बालक के शिक्षण ~~क्रिया~~ की क्रियाशीलता को बढ़ा देता है जिससे व्यवहार लक्ष्य निर्देशित हो जाता है और जल्द शिक्षा ग्रहण कर लेता है। शिक्षण को प्रभावित करनेवाले प्रमुख प्रेरक निम्नलिखित हैं :—

(1) पुरस्कार एवं दण्ड :- बालकों के शिक्षण पर Reward एवं Punishment का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। पुरस्कार देने से बालक सही अनुक्रिया करता है जो उसे लक्ष्य तक पहुंचने में मदद देती है।

पुरस्कार एक धनात्मक पुर्नबलन होता है। यदि सीखने के लिए प्रत्येक सही अनुक्रिया के लिये बालक को Reward दिया जाता है तो वह उसे दुहराता है और आसानी से सीख लेता है। पुरस्कार दो तरह के होते हैं। - (1) मौखिक (2) भौतिक। स्पष्ट हो जाता है कि सही प्रतिक्रिया के लिये मौखिक पुरस्कार के तहत प्रशंसा की जाती है जिससे बच्चा और अधिक तथा जल्दी सीखने के लिए तत्पर होता है। दूसरी तरफ भौतिक पुरस्कार के तहत सही प्रतिक्रिया करने पर बच्चों को कोई वस्तु, पैसा, खिलौना अथवा टॉफी आदि दी जाती है जिससे बच्चा तत्परता से प्रेरित होकर सीखता है। प्रायोगिक अध्ययनों से पता चलता है कि छोटे बालक भौतिक पुरस्कार से ज्यादा प्रोत्साहित होते हैं, जबकि बड़ा बच्चा

Verbal reward से ज्यादा प्रभावित होता है। इस संदर्भ में थार्नडाईक द्वारा किया गया प्रयोग बड़ा ही लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण है। थार्नडाईक ने अपने प्रयोग में कुछ बच्चों को चार समूह में बाँट कर अध्ययन किया। उसने पहले समूह के बच्चों को शिक्षण के लिये भौतिक पुरस्कार दिया तथा दूसरे समूह के बच्चों को मौखिक पुरस्कार दिया। इसी तरह तीसरे समूह के बच्चों को नहीं सीखने या गलत शिक्षण के लिये दण्ड दिया तथा चौथे समूह को कुछ नहीं कहा गया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि बच्चों की शिक्षण का निष्पादन चौंकाने वाला आया। पहले समूह के बच्चों का निष्पादन दूसरे समूह के बच्चों से अच्छा रहा। इसी तरह दूसरे समूह के बच्चों का निष्पादन तीसरे समूह के बच्चों से अच्छा रहा तथा चौथे समूह के बच्चों की तुलना में तीसरे समूह के बच्चों का निष्पाद अच्छा रहा। इसका मतलब यह हुआ कि शिक्षा पर पुरस्कार एवं दण्ड का प्रभाव पड़ता है। यह भी सत्य है कि दण्ड से पुरस्कार शिक्षा में ज्यादा कारगर पुर्नबलन है। इसी प्रकार यह भी साबित हो जाता है कि गलत शिक्षण या कार्य के लिए दण्ड भी एक निषेधात्मक पुर्नबलन है। इस संदर्भ में चूहों पर भुलभुलैया में किया गया प्रयोग भी यही साबित करता है। देखा गया कि गलत अनुक्रिया करने पर चूहों को भुलभुलैया में दण्डस्वरूप Electric Shock लगता था। फलतः वह गलत अनुक्रिया करना छोड़ दिया।

अध्ययनों में आगे यह भी देखा गया कि छोटे बच्चों एवं गरीब परिवार के बच्चों के लिये भौतिक पुर्नबलन (Material reinforcement) अधिक कारगर होता है, जबकि बड़े बच्चों और धनी परिवार के बच्चों के लिये मौखिक पुरस्कार (Verbal reinforcement) ज्यादा महत्व रखता है।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट हो गया कि दण्ड एक तरह का निषेधात्मक पुर्नबलन (Negative reinforcement) है, जो पुरस्कार से कम प्रभावी होता है। गलत शिक्षण पर यह भी एक पुर्नबलन का कार्य करता है। यानी गलत शिक्षण या नहीं शिक्षण पर यह भी लाभप्रद है। इससे गलतियों में सुधार होती है।

(2.) प्रशंसा एवं निंदा :- मानव की शिक्षा पर प्रशंसा एवं निंदा भी एक प्रेरक का कार्य करता है। इसके प्रभाव को देखने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने कई प्रयोग किये। इस संदर्भ में Hurlock (1925) द्वारा किया गया अध्ययन अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने बच्चों को समान रूप में चार वर्गों में बाँटा। पहले समूह के बच्चों गणित की समस्याओं के समाधान

गणित के प्रश्नों का हल करने पर प्रशंसा मिलती थी। इतना ही नहीं इस समूह के छात्रों का निष्पादन खराब रहने पर भी यह कहा जाता था कि बहुत बढ़िया, शाबाश और फिर कोशिश करो। दूसरे समूह को सही या खराब Performance पर डाँट मिलती थी, निंदा की जाती थी। तीसरा समूह उपेक्षित छात्रों का था। इन्हें केवल दूसरे समूह के छात्रों की Performance से अवगत कराया जाता था। इसीतरह चौथा समूह ऐसे छात्रों की थी जिन्हें कुछ नहीं बताया जाता था। परिणाम में देखा गया कि प्रशंसावाले समूह का Performance सर्वोत्कृष्ट था और नियंत्रित समूह का Performance सर्वाधिक Poor था। इसका मतलब हुआ कि Praise & Blame एक तरह की incentive का काम करता है।

परिणाम ज्ञान :- परिणाम की जानकारी भी शिक्षा के लिए एक तरह की प्रेरणा का काम करती है। जब व्यक्ति को शिक्षा देते समय उनके Performance और प्रगति की जानकारी दी जाती है तो वे अगली बार अपनी गलतियों को सुधारकर और अच्छा करने का प्रयास करते हैं। इससे सही अनुक्रिया को दुहराने की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है। रैंसल ने अपने प्रयोगों के आधार पर बताया कि Knowledge of result का शिक्षाअर्जन में बहुत बड़ा हाथ होता है। थार्नडाइक भी अपने एक प्रयोग में पाया कि जब प्रयोग के दौरान प्रयोज्य को रेखा खींचने का काम दिया गया और देखा गया कि Knowledge of result वाले समूह का निष्पादन अच्छा था।

प्रतियोगिता और सहयोग :- बच्चों की शिक्षा पर प्रतियोगिता तथा सहयोग का भी प्रभाव पड़ता है। दोनो ही अलग अलग किस्म के प्रोत्साहन हैं। अध्ययनों एवं दैनिक जीवन के निरीक्षण से पता चलता है कि समूह प्रतियोगिता की अपेक्षा वैयक्तिक प्रतियोगिता अधिक प्रभावशाली होती है। इसी प्रकार सहयोग के कारण शिक्षा सहज हो जाती है, सहायता मिलती है। वाजरेल ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रतियोगिता की अपेक्षा सहयोग अधिक स्वस्थ प्रोत्साहन प्रस्तुत करता है।

निष्क्रय एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा :- उद्देश्यपूर्ण शिक्षा बच्चों के अन्दर एक प्रेरक का कार्य करती है। इससे बच्चे प्रोत्साहित होते हैं और शिक्षा ग्रहण करने के प्रति सजग हो जाते हैं। रुचि बढ़ जाती है। इसके संदर्भ में किए गये अध्ययनों से ज्ञात होता है कि निष्क्रय एवं निरुद्देश्य शिक्षण की तुलना में उद्देश्यपूर्ण शिक्षण अधिक प्रभावशाली होती है। इसमें बच्चे शिक्षाग्रहण के लिये अधिक क्रियाशील रहते हैं। इसीलिए बच्चों को आजकल Purposive education देने की वकालत की जाती है।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि शिक्षा में प्रेरणा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इससे बच्चों में शिक्षा के प्रति क्रियाशीलता एवं रुचि बढ़ती है। इसके बावजूद भी यह भी सत्य है कि बच्चों के शिक्षण में प्रेरणा के अलावे उनकी अभिरुचि, बुद्धि अभिवृत्ति, रुचि आदि कई कारणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए प्रेरणा को एकमात्र कारक न मानकर शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कारक मानना ही उचित प्रतीत होता है।

25.07.2020
डी० के० कालेज, डुमाँव
मनोविज्ञान विभाग